समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

एटीएफ (Jet Fuel) की कीमत रिकॉर्ड स्तर पर : ₹2.07 लाख प्रति किलोलीटर पार, एयरलाइंस पर बढ़ा भारी दबाव

Sanket Morankar

Published on 01 Apr 2026

भारत में एविएशन सेक्टर के लिए एक बड़ी चिंता सामने आई है, जहां एविएशन टर्बाइन फ्यूल (ATF) यानी जेट फ्यूल की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई हैं। ताजा आंकड़ों के मुताबिक, ATF की कीमत ₹2.07 लाख प्रति किलोलीटर के पार पहुंच चुकी है, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर माना जा रहा है। इस तेज बढ़ोतरी ने एयरलाइंस कंपनियों की लागत में भारी इजाफा कर दिया है और इसका असर सीधे यात्रियों की जेब पर पड़ने की संभावना है।

विशेषज्ञों के अनुसार, ATF की कीमतों में यह उछाल अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी और वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव के कारण आया है। खासकर पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और आपूर्ति बाधाओं ने तेल बाजार को अस्थिर कर दिया है, जिससे ईंधन की कीमतों में तेजी देखी जा रही है।

एविएशन टर्बाइन फ्यूल एयरलाइंस के कुल परिचालन खर्च का लगभग 35% से 40% हिस्सा होता है। ऐसे में इसकी कीमतों में अचानक बढ़ोतरी एयरलाइंस के मुनाफे पर सीधा असर डालती है। कई एयरलाइंस पहले ही घाटे में चल रही हैं और अब बढ़ती ईंधन लागत के कारण उनकी वित्तीय स्थिति और कमजोर हो सकती है।

एयरलाइंस कंपनियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे बढ़ती लागत को कैसे संभालें। आमतौर पर कंपनियां इस बोझ को टिकट कीमतों में बढ़ोतरी के जरिए यात्रियों पर डालती हैं। ऐसे में आने वाले दिनों में हवाई यात्रा महंगी होने की पूरी संभावना है। विशेष रूप से घरेलू उड़ानों के किराए में बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है।

उद्योग से जुड़े जानकारों का कहना है कि अगर ATF की कीमतें इसी तरह ऊंची बनी रहती हैं, तो एयरलाइंस को अपनी उड़ानों की संख्या कम करनी पड़ सकती है या फिर कुछ रूट्स पर सेवाएं बंद करनी पड़ सकती हैं। इससे यात्रियों को न केवल महंगे टिकट का सामना करना पड़ेगा, बल्कि उड़ानों की उपलब्धता भी प्रभावित हो सकती है।

सरकार के सामने भी इस स्थिति से निपटने की चुनौती है। विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार अगर ATF पर लगने वाले टैक्स में कुछ राहत देती है, तो इससे एयरलाइंस को थोड़ी राहत मिल सकती है। वर्तमान में ATF पर अलग-अलग राज्यों में वैट (VAT) की दरें अलग-अलग हैं, जो कीमतों को और बढ़ा देती हैं।

इसके अलावा, एयरलाइंस कंपनियां भी अपने परिचालन को अधिक कुशल बनाने की कोशिश कर रही हैं। वे ईंधन की खपत कम करने के लिए नए तकनीकी उपाय अपना रही हैं और लागत नियंत्रण पर जोर दे रही हैं। हालांकि, इन उपायों का असर सीमित ही हो सकता है, क्योंकि ईंधन की कीमतों में इतनी बड़ी बढ़ोतरी को पूरी तरह संतुलित करना आसान नहीं है।

ATF की कीमतों में यह उछाल ऐसे समय पर आया है जब एविएशन सेक्टर महामारी के बाद धीरे-धीरे पटरी पर लौट रहा था। यात्रियों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही थी और एयरलाइंस अपनी सेवाओं का विस्तार कर रही थीं। लेकिन अब बढ़ती लागत इस रिकवरी को प्रभावित कर सकती है।

यात्रियों के लिए भी यह स्थिति चिंता का कारण बन सकती है। हवाई यात्रा पहले ही कई लोगों के लिए महंगी मानी जाती है, और अब किराए में संभावित बढ़ोतरी से यह और भी महंगी हो सकती है। खासकर मध्यम वर्ग के यात्रियों पर इसका ज्यादा असर पड़ सकता है।

वैश्विक स्तर पर भी जेट फ्यूल की कीमतों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। कई देशों में एयरलाइंस कंपनियां इसी तरह की चुनौतियों का सामना कर रही हैं। ऐसे में यह समस्या केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक आर्थिक मुद्दा बन चुका है।

कुल मिलाकर, ATF की कीमतों का ₹2.07 लाख प्रति किलोलीटर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचना एविएशन सेक्टर के लिए एक बड़ी चुनौती है। इससे न केवल एयरलाइंस कंपनियों की वित्तीय स्थिति प्रभावित होगी, बल्कि यात्रियों को भी महंगी यात्रा का सामना करना पड़ सकता है। आने वाले समय में सरकार और उद्योग दोनों को मिलकर इस समस्या का समाधान निकालना होगा, ताकि एविएशन सेक्टर की स्थिरता और विकास सुनिश्चित किया जा सके।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.